राज्य परिशिष्ट 8

(यीशु के दृष्टान्त)
मुद्दई

मत्ती 5:25-26 में मुद्दई का दृष्टांत
परमेश्वर के राज्य में क्षमा के विषय में है।

पढ़ें मत्ती 5:25-26

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?
ध्यान दें। कुछ लोग इसे दृष्टांत के रूप में नहीं मानते। हालाँकि यह एक सांसारिक कहानी है स्वर्गीय अर्थ के साथ। यह एक सामान्य कचहरी का उपयोग एक आत्मिक संदेश का वर्णन करने के लिए करता है। एक सांसारिक कचहरी की कार्यप्रणाली को एक प्रोत्साहन के संदर्भ में बताया गया है।

---

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 5:21-24 में निहित है।
यह दो हिस्सों से मिलकर बना हैः
मत्ती 5:21-22 छठी आज्ञा की व्याख्या से संबंधित है। व्याख्याकार मत्ती 5:21 के अनुवाद के मामले को लेकर अलग अलग राय देते हैं। कुछ अनुवाद करते है, ''यह लोगों को बहुत पहले कहा गया था।'' इसका अर्थ है कि मूसा ने व्यवस्था में इस्त्राएल के पित्रों से कुछ कहा था और यह माना जाता है कि यीशु ने मूसा के नियमों पर श्रेष्ठता का एक स्वर ग्रहण किया। कुछ अनुवाद करते हैं, ''यह लोगों द्वारा बहुत पहले कहा गया था'', जिसका अर्थ है कि व्यवस्था के प्राचीन व्याख्याकारों (रब्बियों) ने कुछ कहा था, और जो कुछ भी उन्होंने कहा यीशु उससे सहमत नहीं थे या उसे खतरनाक रूप से अधूरा माना।

दूसरा अनुवाद निम्नलिखित कारणों से सही है। यीशु ने पहले मत्ती 5:17 में व्यवस्था की पुष्टि नहीं की और फिर बाद में मत्ती 5:21 में उसे एक तरफ कर दिया। यदि यीशु इस बात का जिक्र कर रहे होते कि मूसा ने व्यवस्था में क्या आज्ञा दी है, तो उन्होंने इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया होता, ''मूसा ने आज्ञा दी थी'' या ''यह लिखा है'' (मत्ती 4:4,7,10)। बाद में यहूदी लेखन अपने पहले शिक्षकों रब्बी हिलेल और शम्मई को संदर्भित करने के लिए इस वाक्य का प्रयोग करते हैं ''पूर्वजों के पिता।'' और यह शब्द ''यह कहा गया था'' पुराने नियम में लिखे हुए शब्दों की तुलना में ऐसे शिक्षकों की मौखिक परंपरा से अधिक जुड़ा हुआ है। निष्कर्ष यह है कि ''बहुत पहले के लोग'' वे लोग थे जिन्होंने लिखित पुराने नियम का अनुवाद मौखिक रूप से किया था। व्यवस्था के पत्र का सारांश गलत नहीं था, लेकिन यीशु के शिक्षण के पता चलता है कि उन प्राचीन रब्बियों ने

इसके महत्व को अनुपयुक्त तरीके से बताया, जैसा कि फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक अभी भी यीशु के दिनों में कर रहे थे।

छठी आज्ञा के प्राचीन अनुवादकों ने छठी आज्ञा के पत्र को सही तरीके से प्रस्तुत किया, ''हत्या न करना'' (निर्गमन 20:13)। साथ ही शब्दों का सार जो उन्होंने जोड़ा, ''यदि कोई हत्या करता है तो वह दण्ड के योग्य ठहरेगा'', पुराने नियम में पाया जा सकता है (उत्पत्ति 9:6)। हालाँकि वर्तमान संदर्भ में जो उन्होंने कहा वह गलत नहीं था, बल्कि जो उन्होंने अनकहा छोड़ दिया, जो उन्होंने अनुवाद नहीं किया और जिस पर वे जोर देने में असफल हो गए! प्राचीन अनुवादक और साथ ही साथ पुराने नियम के अनुवादक यीशु मसीह के दिनों में छठी आज्ञा का पूर्ण सारांश नहीं दे रहे थे। उन्होंने केवल *व्यवस्था के पत्र* को लागू किया, लेकिन *व्यवस्था के मूलभूत भाव* को अनदेखा कर दिया! वे कुछ इस प्रकार कहते, ''जब तू बंदूक, चाकू या औषधि का प्रयोग करे तो सावधान रहना, क्योंकि तू किसी को मार सकता है।''

यीशु सिखाते हैं, जब तक ये अनुवादक व्यवस्था के पत्र पर जोर देते हैं, लेकिन लोगों को इसके उन आत्मिक कारणों के खिलाफ चेतावनी देने में विफल रहते हैं जिनके कारण इस प्रकार की हिंसा (हत्या) उत्पन्न होती है, तब तक वे परमेश्वर की व्यवस्था को मानव समाज में केवल दण्ड की नियमावली से अधिक और कुछ नहीं बनाते। यीशु सिखाते हैं कि परमेश्वर की दस आज्ञाएँ केवल दण्ड संहिता से बहुत अधिक हैं। दस आज्ञाँए अपराध के बाहरी कार्यों से परे जाती है और बाहरी अपराधों के कारणों पर लागू होती हैं, जैसे कि, हृदय की पापमय प्रवृत्ति, जो बाहरी पापमय कार्यों के वास्तविक कारण है! हत्या के बाहरी कार्य की शुरूआत सदैव हृदय की आंतरिक प्रवृत्ति से होती है। मनुष्य समान्यत केवल *बाहरी समस्या* को देखता है। परमेश्वर हमेशा *मूल कारण* को देखते हैं! उदाहरण के लिए, मुहँ से निकले कड़वे शब्द क्रोध, घृणा और हृदय में क्षमा न करने वाली आत्मा की अभिव्यक्ति हैं!

''रैका'' (तिरस्कार के लिए एक आरामी शब्द), जिसका अर्थ है ''खाली सिर'', जो कि उस व्यक्ति के लिए हृदय में तिरस्कार व्यक्त करता है।

''मूर्ख या ''बेवकूफ'' हृदय में एक व्यक्ति के खिलाफ क्रोध, घृणा और कड़वाहट को व्यक्त करता है। यीशु इन पापों का कोई वर्गीकरण प्रदान नहीं करते केवल एक बिंदु स्थापित करते हैं। जो कोई भी किसी दूसरे के लिए अपने मन में क्रोध, घृणा और कड़वाहट को बनाए रखता है, ''वह नरक में डाले जाने के खतरे में है'', अर्थात परमेश्वर से मृत्यु के दण्ड का हकदार है! जो पाठ यीशु सिखाते हैं वह यह है कि हृदय में पापमय क्रोध, घृणा, और कड़वाहट, कड़वे शब्दों की ओर ले जाते हैं और कड़वे शब्द सार में ''हत्या'' हैं जो हृदय में जगह ले रही है! जब तक कोई व्यक्ति इससे पश्चयाताप नहीं करता, वह नरक में जाने के लिए दोषी ठहराया जाएगा। यीशु सिखाते हैं कि सभी बुराईयों और पाप की जड़ मनुष्य के हृदय में बनी रहती है। यह मनुष्य का हृदय ही है जहाँ, घृणा और भेदभाव को प्रेम से और, पाखंड और स्वार्थीपन को ईमानदारी से बदलना आवश्यक है।

मत्ती 5:23–24 छठी आज्ञा का लागूकरण है। कुछ लोग समझते हैं कि जब तक वे आत्म संयम का अभ्यास करते हैं और अपने हृदय में मौजूद इस पापमय स्वभाव को क्रोध और कड़वे शब्द *बोलने* के द्वारा प्रगट नहीं करते, तब तक वे छठी आज्ञा का पालन करते हैं। लेकिन यीशु सिखाते हैं कि

किसी भी प्रकार का संबंध जिस में सामंजस्य न हो, छठी आज्ञा का उल्लंघन है। जब तक एक व्यक्ति अपने भाई या बहन के साथ मेल मिलाप से नहीं रहता, वह छठी आज्ञा को तोड़ता है और परमेश्वर की आराधना नहीं कर सकता। चाहे वह व्यक्ति बाहरी रूप से परमेश्वर की आराधना करें, परमेश्वर उस व्यक्ति के साथ मिलाप या संगति नहीं करेंगे! किसी भी व्यक्ति के साथ एक तनावपूर्ण संबंध परमेश्वर के साथ तनावपूर्ण संबंध का कारण बनता है! 1यूहन्ना 4:20 कहता है, ''यदि कोई कहे कि 'मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ' और अपने भाई से बैर रखे तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा प्रेम नहीं रख सकता।''

जब यीशु कहते हैं, ''यदि तुझे याद आए कि तेरे भाई के मन में तेरे लिए कुछ है'', तब उनके कहने का अर्थ है कि विरोध एक ऐसा महत्वपूर्ण स्वभाव है जो कि ''एक शिकायत'' कहलाने के योग्य है। वह केवल धार्मिक शिकायातों को ही नहीं बल्कि किसी भी शिकायत को संबोधित करते हैं। यीशु ने कि किसी प्रकार की शिकायत का उल्लेख ही नहीं किया। वह सारा जोर मेल मिलाप करने की आवश्यकता और अपने भाई के साथ सामंजस्य में रहने पर देते हैं। जब भी आपको पता चलता है कि आपके भाई को आपके असंतुष्ट होने का अधिकार है, आपको उसके साथ मेल मिलाप करने का प्रयास करना चाहिए!

छठी आज्ञा का यीशु का सकारात्मक लागूकरण यह है कि हृदय क्रोध घृणा और कड़वाहट के बजाय, हर समय प्रेम से भरा होना चाहिए। वह सिखाते हैं कि जब तक आप आपने भाई या बहन के साथ मेल मिलाप नहीं करते तब तक आप परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। इसी समायोजन में यीशु ने मुद्दई का दृष्टांत बताया।

(2) दृष्टांत की कहानी मत्ती 5:25-26 में एक प्रोत्साहन के रूप में निहित है।

(3) दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण स्वयं इसका प्रोत्साहन है जो कि मत्ती 5:25-26 में निहित है।

एक व्यक्ति को जल्द से जल्द अपने विरोधी के साथ अपने विवाद को निपटाना चाहिए। उसे जल्दी से कोशिश करनी चाहिए कि वह उस व्यक्ति के साथ मेल मिलाप कर ले जो यह *सोचता* या *महसूस* करता है कि वह उससे नाराज है। उसे यह तुरन्त करना चाहिए, क्योंकि हो सकता है कि नाराज भाई या विरोधी कानूनी कार्यवाही करने का विचार कर रहा हो या हो सकता है कि उसने ऐसी कार्यवाही की शुरूआत भी कर दी हो। फिर से यीशु यह नहीं कहते कि विरोधी नैतिक रूप से सही है या नहीं। साथ ही वह अपराध की प्रवृत्ति के बारे में भी नहीं बताते, यद्पि यह आर्थिक ऋण की ओर संकेत करता है (मत्ती 5:26)। वह न्याय (जो यह सिद्ध करता है कि आप सही हैं) पर नहीं, परन्तु मेल मिलाप (अपने विरोधी के साथ, बिना यह सोचे की कौन सही है) पर जोर देते हैं! यहाँ तक कि अगर अंत में अंतिम न्याय के समय इसके साथ व्यवहार किया जाएगा, फिर भी इस लेखांश में न्याय के प्रश्न पर चर्चा नहीं की गई।

जब तक एक व्यक्ति के पास ऐसा करने का अवसर है तो उसे हर मामले को ''कचहरी से बाहर'', निपटाने का प्रयास करना चाहिए। उसे संसार की कचहरी को शामिल किए बिना, चार आँखो के तले

अपने विरोधी से मेल मिलाप करने का प्रयास करना चाहिए। यदि वह ऐसा करने में असफल हो जाता है, तो उसे जेल में डाला जा सकता है, जब तक कि वह एक एक कौड़ी न भर दे।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

यीशु इस दृष्टांत में किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं। हालाँकि, संदर्भ दर्शाता है कि अंतिम विश्लेषण में यीशु सांसारिक नहीं बल्कि स्वर्गीय न्यायधीश के बारे में बता रहे हैं (मत्ती 6:15)। वह सांसारिक बन्दीगृह के बारे में नहीं वरन नरक के बारे में बोल रहे हैं (मत्ती 5:22; 18:30,35)। यह हृदय का अनंरूनी रवैया है जो सभी लोगों के प्रति प्रेम में एक होना चाहिए। यीशु चेतावनी देते हैं कि यदि एक व्यक्ति अपने हृदय में दूसरे व्यक्ति के प्रति क्रोध, घृणा और कड़वाहट के साथ मरता है, तब यह रवैया अंतिम न्याय में स्वर्गीय न्यायधीश के सामने उस व्यक्ति के विरोध में गवाही देगा और वह नरक के बंदीगृह से नहीं बच पाएगा। यीशु का तत्पर्य यह है कि परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग अपने हृदय में दूसरे लोगों के प्रति क्रोध, घृणा और कड़वाहट को थामे नहीं रखते।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 5:25-26 में मुद्दई का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में क्षामा" के बारे में है। दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "मेल मिलाप का समय सदैव अभी है!"

क्षमा परमेश्वर के राज्य की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग उन भाई या बहनों से जो उन से क्रोधित हों या वे उन से क्रोधित हों, मेल मिलाप करने में देर नहीं करते, क्योंकि "कल" शायद बहुत देर हो सकती है! वह व्यक्ति जो मेल मिलाप के लिए पुरजोर प्रयास करने से इंकार करता है, वह कभी अपना ऋण नहीं चुका पाएगा।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

(1) व्यवस्था का पत्र और व्यवस्था की आत्मा।

पढ़ें उत्पत्ति 4:6-7; व्यवस्थाविवरण 6:5; लैव्यव्यवस्था 19:18; नीतिवचन 14:17; 22:24-25; अय्यूब 5:2

खोजें और चर्चा करें। बुराई की जड़ के विषय में बाइबल क्या सिखाती है?

ध्यान दें। बुराई की जड़ हृदय में है। व्यवस्था का पत्र नहीं, बल्कि व्यवस्था की आत्मा मनुष्य के पापमय स्वभाव और मनोवृत्ति को उजागर करती है। आधुनिक और प्राचीन यहूदी अनुवादकों के पास छठी आज्ञा के अपने अनुवाद को *बाहरी* हत्या के *कार्य* के रूप में सीमित करने के अलावा कोई बहाना नहीं था।

पहले घरेलू झगड़े के दौरान, परमेश्वर ने कैन से कहा, "तू क्यों क्रोधित हुआ? तेरे चेहरे पर उदासी क्यों छा गई? यदि तू भला करे तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे,

तो पाप द्वार पर छिपा रहता है; और उसकी लालसा तेरी ओर होगी, और तुझे उस पर प्रभुता करनी है।'' परमेश्वर कैन के हृदय की अंदरूनी मनोवृत्ति को संबोधित कर रहे थे, अर्थात जलन और क्रोध। पुराने नियम में, परमेश्वर ने पहले ही दस आज्ञाओं को, ''परमेश्वर से प्रेम रखो'' और ''अपने पड़ोसी से प्रेम रखो'' के साथ संक्षेप में प्रस्तुत किया। यह प्रेम ही है तो कि हृदय की आंतरिक मानोवृत्ति के साथ-साथ मनुष्य के बाहरी आचरण को भी निर्धारित करता है। क्रोध मनुष्य के लिए मूर्खतापूर्ण कार्य करने का कारण बनाता है और द्वेष (बैर) मारता है।

(2) ग्रहण न करने योग्य और ग्रहण करने योग्य बलिदान।

पढ़ें उत्पत्ति 4:5; 1शमूएल 15:22-23; यशायाह 1:10-17; यिर्मयाह 6:19-20; आमोस 5:22-24; मीका 6:6-8; मरकुस 12:41-44; इब्रानियों 11:4।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल उन भेटों और बलिदानों के बारे में क्या सिखाती है जो परमेश्वर को ग्रहण योग्य नहीं ?

ध्यान दें। ऐसी भेंट और बलिदान जो परमेश्वर के पास उस समय लाये जाते हैं जब एक व्यक्ति के हृदय में लगातार पाप और अन्याय बना रहता है, परमेश्वर की दृष्टि में पूर्णरूप से अयोग्य है। परमेश्वर ऐसी भेंट और बलिदानों को स्वीकार नहीं करते! जब आप अपने हृदय में किसी के विरूद्ध घृणा को थामे रखते हैं या तथाकथित ''पवित्र युद्ध''[1] में लगे होते हैं तब ''अत्यधिक धर्मी'' होने के नाते जैसेः एक मात्र परमेश्वर का अंगीकार करना, सप्ताह में दो बार उपवास करना, प्रत्येक दिन में तीन बार प्रार्थना करना, हर साल तीन बार यरूशलेम की तीर्थ यात्रा पर जाना और परमेश्वर और गरीबों को अपनी कमाई का दसवां हिस्सा देना, बाइबल के परमेश्वर की दृष्टि में निश्चित रूप से बेकार है।

(3) मेल मिलाप का समय अभी है।

खोजें और चर्चा करें। ये लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है ?

ध्यान दें।

- ***पढ़ें*** रोमियों 12:18. जब आपने अपनी सामर्थ्य से अपने विरोधी के साथ मेल मिलाप करने का भरसक प्रयास किया हो, और वह अभी भी निष्पक्ष होने और जहाँ क्षमा करने की आवश्यकता हो वहाँ क्षमा करने से इंकार करता है, तब दोष पूर्ण रूप से केवल आपके विरोधी पर पड़ता है।
- ***पढ़ें*** नीतिवचन 27:1; लूका 4:18-19 की तुलना यशायाह 61:2; 2कुरिन्थियों 6:2 से की गई। परमेश्वर बार-बार टालने पर चेतावनी देते हैं! कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय कल पर न छोड़ें, क्योंकि कल शायद बहुत देर हो सकती है! रूपांतरण, विश्वास और अपने भाई या बहन के साथ मेल मिलाप जैसे महत्वपूर्ण निर्णयों को लेने का समय सदैव अभी होता है!